--- सप्तम अध्याय

-:: उपसंहार ::-

साठोत्तरी हिन्दी कविता की वस्तुगत और शिल्पगत उपलब्धियाँ तथा सीमाएँ

साठोत्तरी हिन्दी कविता युवा कवियों द्वारा रचित वह खास किस्म की परम्परामुक्त कविता है जो सन् साठ के बाद लिखी गई है और जो 'वस्तु' और 'शिल्प' की दृष्टि से पूर्ववर्ती काव्यान्दोलन नयी कविता से बहुत कुछ अलगाव रखती है। साठोत्तरी कविता नयी कविता की तरह कोई एक स्वतंत्र आन्दोलन न होकर कई काव्यान्दोलनों का समुच्चय है। ये अकविता, सहज कविता, अगली कविता, प्रतिबद्ध कविता, विचार कविता आदि काव्यान्दोलन अनुभूति और विचार एवं शिल्प के स्तर पर अलग और एक दूसरे के विरोधी होने का आभास देते हैं लेकिन इनके अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इनकी मूलवर्ती चेतना एक है। बासठ, चौंसठ के बाद हुए राष्ट्रव्यापी मोह भंग ने इन्हें जन्म दिया है और व्यवस्था विरोधी भावनाओं तथा उग्र युवा आकांक्षाओं ने इनके स्वरूप को गढ़ा है। वर्तमान मानवीय स्थिति की व्याख्या और वर्तमान व्यवस्था का विरोध इन सभी आन्दोलनों की जड़ में है। इस साठोत्तरी कविता को युवा कविता कह कर भी सम्बोधित किया गया है, क्यों कि इसमें वर्तमान परिवेश को नयी पीढ़ी के नजरिये से देखने के प्रमाण मिलते हैं।

साठोत्तरी कविता के वस्तु और शिल्प की विस्तृत और गम्भीर पड़ताल से अनेक मौलिक स्थापनाएँ सामने आती हैं। साठोत्तरी

कवियों ने कविता में 'वस्तु' पक्ष पर जोर देते हुए भी 'वस्तु' और 'शिल्प' के सन्तुलन पर जोर दिया है। उनकी कविताएँ इस तथ्य की ओर संकेत करती हैं कि साठोत्तरी कविता में कथन की नयी भंगिमाओं की उपस्थिति के बावजूद 'वस्तु' पक्ष अधिक समृद्ध और मूल्यवान है।

जीवन मूल्यों का विघटन, वामपंथी राजनीतिक बोध और विचार तत्व की प्रमुखता साठोत्तरी कविता की 'वस्तु' के तीन प्रमुख आयाम हैं। कुलीनता, जातिगत श्रेष्ठता, आस्तिकता, राष्ट्रीयता और परम्परागत आर्थिक शोषण आदि मान्यताओं के विघटन का साठोत्तरी कविता समर्थन करती है। प्रेम, विवाह और सेक्स से सम्बद्ध नैतिक निष्ठाओं और परम्परागत धारणाओं की निरर्थकता का प्रतिपादन और उनका सम्पूर्ण अस्वीकार साठोत्तरी कविता की वस्तु चेतना का एक अनिवार्य अंग है। गलत और अप्रासंगिक सिद्ध हो रहे जीवन मूल्यों के स्थान पर बन्धुत्व, सहयोग, समानता, क्रान्ति आदि मूल्यों को स्थापित करने का आग्रह साठोत्तरी कविता में बहुत स्पष्ट है। अकविता, भूखी पीढ़ी आदि से सम्बद्ध कुछ कवियों ने मुक्त भोग, संत्रास, अकेलापन आदि को मूल्य स्तर पर प्रतिष्ठित करना चाहा है लेकिन उनका स्वर बहुत सीमित है।

साठोत्तरी कविता राजनीतिक चेतना सम्पन्न कवियों की कविता है। राजनीति को कविता की 'वस्तु' बनाने के प्रश्न पर नयी कविता में जो द्वन्द्व था वह साठोत्तरी हिन्दी कविता में समाप्त हो गया है। राजनीतिक प्रश्नों पर सोच-विचार साठोत्तरी कविता के केन्द्र में है। साठोत्तरी कविता की राजनीतिक चेतना वामपंथी है। धूमिल, लीलाधर जगूड़ी, सव्यसाची, ज्ञानेन्द्रपति, कुमार विकल आदि प्रतिबद्ध कवियों के अतिरिक्त जगदीश चतुर्वेदी, श्याम परमार जैसे अकवि भी वामपंथी राजनीति का समर्थन करते हैं। देश-विदेश की समकालीन राजनीति को

तौलते हुए ये कवि इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वामपंथ राजनीति की सही दिशा है। पूंजीवादी और साम्राज्यवादी ताकतों से लड़ने के लिए यही एक सार्थक और मजबूत हथियार है। गणतांत्रिक व्यवस्था को साठोत्तरी कवियों ने प्राय: सन्देह की दृष्टि से देखा है उनकी कविताओं में इस व्यवस्था की उपलब्धियों और असमर्थताओं का प्रामाणिक लेखा-जोखा मौजूद है। चूंकि साठोत्तरी कविता युवा कविता है अत: इसमें युवा वर्ग की हताशा, आकांक्षा, सक्रियता और शक्ति को विस्तार से लिखा गया है। युवा वर्ग के जीवन संघर्ष को हिन्दी कविता में पहली बार इतने विस्तार और गम्भीरता के साथ प्रस्तुत किया गया है। समूची व्यवस्था का सतर्क विरोध साठोत्तरी कविता की 'वस्तु' के मूल में है। वर्तमान व्यवस्था को बदल कर एक शोषणमुक्त भेदभावहीन व्यवस्था की स्थापना का आह्वान साठोत्तरी कवियों ने बार बार किया है।

साठोत्तरी कविता की 'वस्तु' में विचारों की प्रधानता है। इसमें विचार बिम्ब, प्रतीक या फैन्टेसी के जरिये कम उभरकर सीधे और सपाटरूप में अधिक आते हैं। इस कविता की वैचारिकता एक ओर जन सामान्य की तकलीफ और यातना से जुड़ी है तो दूसरी ओर आर्थिक सामाजिक शोषण के प्रति तीखा आक्रोश इसमें है। इसका सौन्दर्यबोध भी जनसामान्य के आस-पास घूमता है, प्रकृति का सौन्दर्य इस कविता में प्राय: उपेक्षित है। कुल मिलाकर साठोत्तरी कविता की 'वस्तु' जिये हुए या कमाये हुए सत्यों, वास्तविक अनुभवों और प्रगतिशील विचारों के तालमेल से निर्मित है। पूर्ववर्ती कविता के मुकाबले यह न केवल जीवन के निकट है अपितु विश्वसनीय भी है।

इस प्रकार राजनीतिक यथार्थ का सतर्क और निर्मम विश्लेषण, भावुक और आदर्शवादी जीवन दृष्टि के बजाय जीवन की

बौद्धिक दृष्टिकोण से देखने का आग्रह, किसी भी प्रकार के भेद-भाव और शोषण का खुला विरोध तथा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करने की आवश्यकता प्रतिपादित करना साठोत्तरी कविता की वस्तु के चर्चित और उल्लेखनीय तत्व हैं।

भाषा कविता के शिल्प का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है। जीवन के बदले हुए यथार्थ को अंकित करने के लिए सदैव उसके अनुकूल एक सही भाषा की आवश्यकता होती है। साठोत्तरी परिवेश की जटिलता, उग्रता और छटपटाहट को चित्रित करने में नयी कविता की रोमानी भाषा बिल्कुल असफल सिद्ध हुई। अत: यह आकस्मिक नहीं था कि एक पूरी पीढ़ी नयी काव्य-भाषा की तलाश में और गढ़ने में संलग्न हो गई। धूमिल और राजकमल चौधरी, रघुवीर सहाय जैसे कवियों ने स्पष्ट कर दिया कि पुरानी और पेशेवर भाषा में किसी किस्म का अर्थ ढूंढना अब व्यर्थ है। साठोत्तरी कविता की भाषा का मुहावरा तेज, सहज और गद्यात्मक है। सपाटबयानी और 'रेटारिक' इसकी शक्ति और क्षमता दोनों हैं। इनसे जहाँ एक ओर कविता जनसाधारण के करीब आने की गवाही देती है वहीं इनके अतिरेक से निरर्थक वक्तव्यों की सृष्टि हुई और कुछ चालू समीकरण भी गढ़ लिए गए। युवा कविता ने मुक्तिबोध की तत्सम बहुल और क्लिष्ट काव्य-भाषा के स्थान पर साधारण बोल-चाल के शब्दों से युक्त एक नयी भाषा को जन्म दिया है। साठोत्तरी कविता का शब्द-संसार बहुत व्यापक है इसमें संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू के अतिरिक्त देशज और तद्भव शब्दों का बहुत बड़ा समूह विद्यमान है। साठोत्तरी कविता की भाषा के शब्द स्रोतों को पाँच वर्गों में विभक्त किया जा सकता है -- (१) राजनीतिक परिवेश, (२) आम आदमी का जीवन, (३) यौन संदर्भ, (४) पौराणिक संदर्भ, (५) तिलिस्मी जासूसी तथा अन्य जीवन संदर्भ। विस्तार के साथ राजनीतिक शब्दावली

पहलीबार हिन्दी कविता में व्यवहृत हुई। वैज्ञानिक आविष्कारों, पौराणिक संज्ञाओं, लोकजीवन के नामों और क्रियाओं से हिन्दी के शब्द-भंडार को व्यापक और समृद्ध बनाने का सफल प्रयास साठोत्तरी हिन्दी कविता में है। इस कविता की भाषागत उपलब्धियों में एक यह है कि इसमें आम आदमी के जीवन के आस-पास से बहुत से शब्दों को उठा लिया गया है। शब्दों को सही संदर्भ में सही जगह पर रखने का कौशल लीलाधर जगूड़ी, धूमिल, सुदामा, चन्द्रकान्त देवताले, जैसे बहुत से कवियों के पास है। इस कौशल से भाषा की शक्ति और अर्थ गांभीर्य को बल मिला है तथा भाषा कहीं अस्पष्ट और कहीं सांकेतिक हुई है। लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भाषा की जीवन से निकटता के साथ-साथ इसमें निहित लक्षणिकता की ओर भी संकेत करता है। व्यंग्यात्मकता साठोत्तरी काव्य-भाषा का सबसे तेज और आक्रामक औजार है। शब्दों से खिलवाड़ की प्रवृत्ति और कुछ शब्दों की बार-बार जुगाली करने की रूढ़ि साठोत्तरी काव्य-भाषा में है। इन्हें भाषा की कमियों और असमर्थताओं के रूप में लिया जाना चाहिए। इन अपवादों को छोड़ दिया जाय तो साठोत्तरी कविता की भाषा उसकी वस्तु के अनुकूल तेज तर्रार सशक्त और अनुभूतियों तथा विचारों की अभिव्यक्ति में सक्षम है।

साठोत्तरी कविता के प्रतीकों के अध्ययन से यह निष्कर्ष हाथ लगता है कि साठोत्तरी कवियों ने एक ओर परम्परागत प्रतीकों को नयी और विशिष्ट अर्थ गरिमा से संयुक्त किया है तो दूसरी ओर उन्होंने सर्वथा नवीन प्रतीकों की सृष्टि भी की है। पहाड़, किरन, सूर्य सर्प आदि प्रतीक युवा कविता में भी हैं लेकिन वे एक नये संदर्भ और नये अर्थ के

साथ प्रस्तुत हुए हैं । पहाड़ अजेय व्यवस्था, सर्व युद्धगामी शक्तियों और सूर्य परिवर्तन की आकांक्षा का प्रतीक बनकर सामने आता है । साठोत्तरी कविता के प्रतीक जीवन के विभिन्न छोरों के सत्य को खोलते हैं । सामाजिक जीवन में व्याप्त बेईमानी, स्वार्थ परता, कारोबारीपन आदि को युवा कवियों ने प्रतीकों के माध्यम से बखूबी चित्रित किया है । सामाजिक संदर्भों के अनुकूल अनेक नये प्रतीक साठोत्तरी कविता में हैं । इन प्रतीकोंके जरिये व्यवस्था द्वारा अपाहिज बना दिये गये आदमी की नियति को पढ़ने का आग्रह साठोत्तरी कविता में बहुत स्पष्ट है । काली नदी (लीलाधर जगूड़ी) नया घड़ा (ऋतुराज) मकान मालकिन (वेणुगोपाल) आदि इसी प्रकार के प्रतीक हैं । हालांकि साठोत्तरी युवा कविता में घोड़ा, सड़क और मौसम जैसे प्रतीक बार-बार दोहराये गए हैं फिर भी इनमें अर्थ की पुनरावृत्ति नहीं है ।

साठोत्तरी कविता में एक ओर सपाटबयानी है तो दूसरी ओर बिम्ब धर्मिता भी । इसमें प्रयुक्त बिम्बों के दो वर्ग हैं -- एक वर्ग के बिम्ब मानवीय संदर्भों से जुड़कर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विसंगतियों को उघेड़ते हैं । दूसरे वर्ग के बिम्ब प्राकृतिक हैं । अकविता, भूखी पीढ़ी, बीटनिक, सम्प्रदाय के कवियों के बिम्ब प्रतिबद्ध कविता और विचार कविता के बिम्बों से अलग - थलग हैं । यौन संदर्भों के सहारे उन्होंने जीवन सत्य को कहने के लिए जो बिम्ब विधान रचा है वह अपनी आक्रामकता और तीखेपन के बावजूद भोंडा और लगभग निरर्थक है । जहां तक प्राकृतिक बिम्बों का प्रश्न है इस कविता में खण्डित बिम्ब ही मिलते हैं । ये बिम्ब कभी परिवेश की भयानकता या उल्लास को उभारते हैं । साठोत्तरी कविता के बिम्बों में रोमानी भावुकता क्रमशः कम होती गयी है । स्थूल, ऐन्द्रिकता से वंचित ये बिम्ब अधिकतर ताजगी लिए हुए

हैं। इनमें दृश्य अनुभूति और विचार का अच्छा तालमेल देखने को मिलता है।

अभिव्यंजना को असरदार बनाने के लिए साठोत्तरी कवियों ने जिन उपमानों का सहयोग लिया है उनमें कुछ प्राकृतिक उपमानों को छोड़कर अधिकतर जन-सामान्य के दैनिक जीवन से लिए गए हैं। नयी कविता से स्टोव, इंजन, बल्ब आदि से उपमान बनाने की जो शुरुआत हुई थी वह साठोत्तरी कविता में बहुत विस्तार पा गई है। सिगरेट, कमीज, हैंगर, कनस्तर, संतरा, स्वेटर, पलंग आदि उपमानों के माध्यम से जीवन की वास्तविकता का चित्रण साठोत्तरी कविता के शिल्प की एक उल्लेखनीय विशेषता है। अकविता जैसे आन्दोलनों के अन्तर्गत लिखी गई कविताओं में प्रयुक्त उपमान भी जीवन के आस-पास से उठाये गये हैं। यह बात और है कि वे प्राय: वीभत्स और असुन्दर हैं। ऐसे उपमान साठोत्तरी कविता की मुख्य धारा में नहीं आते हैं। प्रकृति से लिए गए अधिकतर उपमान प्राय: व्यक्तियंत्रण की टूटन, तकलीफ और हताशा को व्यंजित करते हैं। साठोत्तरी कविता में मानवीकरण की प्रवृत्ति भी मुखर है। कुछ अपवादों को छोड़कर मानवीकरण के अधिकतर उदाहरण अनुभूति की ताजगी और शिल्प की सजगता की ओर संकेत करते हैं।

हालांकि साठोत्तरी कविता मुक्त छन्द में लिखी गई है फिर भी कुछ कवियों ने परम्परागत छन्दों को कुछ परिवर्धन और संशोधन के साथ प्रयुक्त किया है। संभवत: इस प्रवृत्ति के पीछे कविता को जीवन के निकट लाने की भावना सक्रिय है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि अच्छे साठोत्तरी कवियों का छंद पर पूरा अधिकार है परन्तु उन्होंने छन्द को आज की काव्य संवेदना के अनुकूल न पाकर मुक्त छंद में लिखना अधिक अच्छा समझा है।

साठोत्तरी कवियों ने 'वस्तु' को सम्प्रेषित करने के लिए कभी मिनी कविताएँ लिखी हैं तो कभी लम्बी कविताएँ। 'अगली कविता' आन्दोलन तो 'लघुबौद्धिक कविता' का हिमायती था ही, कैलाश वाजपेयी, श्रीकान्त वर्मा, नीलाभ, सुरेन्द्र तिवारी, आदि समर्थ कवियों ने भी कुछ अच्छी छोटी कविताएँ लिखी हैं। आज के जटिल यथार्थ और अपने सुदीर्घ आत्म संघर्ष की झलक देने के लिए युवा कवियों ने लम्बी कविताओं का प्रणयन किया है। इनमें 'अँधेरे में' (मुक्तिबोध) 'मुक्ति प्रसंग' (राजकमल चौधरी), 'पटकथा' (धूमिल), 'लुकमान अली' (सौमित्र मोहन), 'खण्ड खण्ड पाखण्ड पर्व' (मणि मधुकर) 'तलघर' (प्रमोद सिन्हा) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें फैंटेसी, वक्तव्य, बिम्ब विधान, प्रतीक योजना आदि का मिला जुला शिल्प जीवन की वास्तविकता को बहुत सधे और सार्थक ढंग से प्रस्तुत करता है।

कुल मिलाकर साठोत्तरी कविता का 'शिल्प' इसकी 'वस्तु' के अनुकूल और प्रासंगिक है। भाषा, प्रतीक, बिम्ब और उपमान आम आदमी के जीवन के आस-पास से लिए जाने के कारण साठोत्तरी कविता में जीवन की प्रामाणिकता आगई है। साठोत्तरी कविता पर 'शिल्प' की धारणा के अवमूल्यन का जो आरोप लगाया जाता है वह आंशिक तौर पर ही सच है। साठोत्तरी कवि 'शिल्प' को महत्व देने से कविता की रूपवाद में परिणति के खतरों और निष्कर्षों से वाकिफ है अतः वह शिल्प को उतना ही महत्व देता है जितना 'वस्तु' को सम्प्रेषित करने के लिए आवश्यक होता है। प्रयोगवाद की तरह उसमें कविता के 'शिल्प' को ही कविता का साध्य मान लेने का अतिरेक नहीं है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि साठोत्तरी कवि में शिल्पगत सजगता